मूल्यों के प्रति आस्था व सम्मान होना चाहिए - न्यायमूर्ति एस.आर.डोंगावकर

माउंट आबू, 11 मई। मुंबई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, न्यायमूर्ति एस.आर. डोंगावकर ने कहा है कि न्यायिक अधिकारियों की ओर से कई बार न्याय नहीं केवल निर्णय दिए जाने से न्यायिक प्रक्रिया से लोगों को निराशा हो जाती है। यह बात उन्होंने ब्रह्माकुमारी संगठन ज्ञान सरोवर परिसर में न्यायविद् प्रभाग की ओर से न्याय का सत्य आधार-मूल्य विषय पर आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन में आए न्यायिक अधिकारियों, न्यायविदों व न्यायिक सेवाओं से जुड़े हुए लोगों को उदघाटन सत्र में संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि सर्वमान्य एवं सत्यों पर आधारित न्याय के लिए मानवीय मन में मूल्यों के प्रति आस्था व सम्मान होना चाहिए। मूल्यों को महत्व देने से ही किसी व्यक्ति अथवा परिस्थिति का सही आंकलन करने से न्याय दिया जाना संभव होगा। इस व्यवसाय से जुड़े हुए विशेषकर अधिवक्तागण जब किसी वादी का वाद ग्रहण करते हैं तब उनका एकमात्र उद्देश्य यही होता है कि वे किसी भी प्रकार निणर्य अपने मुवक्लि के पक्ष में करवा लिया जाए। उसके लिए चाहे उन्हें बीसों ही नाखुनों का जोर क्यों न लगाना पड़े। अपनी साख जमाने से लेकर कठिन दौर से गुजरती व्यवसायिक प्रतिस्पर्धाओं के चलते भी कई बार मूल्यों की जाने अनजाने अनदेखी हो जाती है जिससे न्यायिक प्रक्रिया के प्रभावित होने की संभावना बनी रहती है।

ब्रह्माकुमारी संगठन की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि निणर्य लेते समय क्षमाशील व रहमदिल बनकर रहें तो दोषी को सुधरने का हौसला मिले। मानवीय मूल्यों की गिरावट की वजह से मनुष्य का महत्व का भी पतन हो रहा है। वर्तमान परिवेश में सकारात्मक चिंतन, मानसिक शांति से लेकर उच्च सतोगुणी व्यक्तित्व धारण करने जैसे मूल्यों की समाज को आवश्यकता है। रजोगुणी व्यक्ति गुण अवगुण के दोष देखता है, तमोगुणी व्यक्ति को सभी में अवगुण ही दिखाई देते हैं जबकि सतोगुणी व्यक्ति हंस के समान नीर क्षीर को अलग करते हुए अवगुणों में भी गुणों को ढूंढ लेता है।

ब्रह्माकुमारी संगठन की सह मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि जहां गुणग्राही दृष्टि है वहां परस्पर सदभाव, स्नेह, एक दूसरे को सहयोग व मानसिक शांति सदा उपस्थित रहती है। किसी को दुःख देना, बदला लेने जैसी कलुषित भावना रखना श्रेष्ठ संस्कारवान मनुष्य के लक्षण नहीं हैं।

मुंबई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, न्यायमूर्ति ए.एच. जोशी ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में जीवन की सफलता के लिए आध्यात्मिक पृष्ठभूमि की नितांत आवश्यकता है जिससे हर परिस्थिति में मूल्यों का पालन करने की प्रेरणा मिलती है। मूल्यों को अपनाने वाला व्यक्ति सैदव सफलता की ओर अग्रसर रहता है। मूल्यनिष्ठ वैचारिक धरातल वाले व्यक्ति से गलतियां होने की संभावनाएं बहुत ही कम रहती हैं। वह समाज व परिवार के लिए प्रतिबद्वता के साथ नैतिक आचरण के लिए भी जबाबदेह बना रहता है।

इस अवसर पर न्यायविद प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीएल महेश्वरी, ग्राम विकास प्रभाग बीके मोहिनी बहन व बीके लता अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व दीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का विधिवत उदघाटन किया गया।